

दवाइयों की जांच किन जंतुओं पर करें?

कई सारी दवाइयां चूहों पर परीक्षण के बाद काफी आशाएं जगाती हैं मगर इंसानी परीक्षण में बुरी तरह असफल साबित होती हैं। अतीत में हो चुके इस तरह के परीक्षणों के विश्लेषण से यह बात उजागर हुई है। यह विश्लेषण स्टीव पेरिन ने किया है जो एएलएस नामक एक तंत्रिका रोग का अध्ययन करते हैं। इस बीमारी में कार्यकारी तंत्रिकाएं प्रभावित होती हैं और मांसपेशियों को कार्य करने का निर्देश नहीं दे



पातीं। धीरे-धीरे ये मांसपेशियां बेकार होती जाती हैं और काम करना बंद कर देती हैं।

पेरिन ने कुछ ऐसे चूहे लिए थे जिनमें एएलएस नुमा लक्षण नज़र आते थे। इन पर उन्होंने ऐसे 100 रसायनों को आजमाया जिन्हें पहले औषधि का उम्मीदवार माना गया था। मगर इनमें से अधिकांश ने रोग को कम करने जैसा कोई असर नहीं दिखाया। इनमें से 8 रसायन ऐसे थे जिन्हें चूहों पर किए गए अध्ययनों में तो कारगर पाया गया था मगर इंसानी परीक्षणों में ये असफल रहे थे।

पेरिन का निष्कर्ष है कि पूर्व में किए गए अध्ययनों में जो सकारात्मक परिणाम मिले थे वे फर्जी हैं और घटिया ढंग से किए गए प्रयोगों के नतीजे हैं। अपने विश्लेषण के आधार पर पेरिन का सुझाव है कि शोधकर्ताओं को चाहिए कि वे जंतुओं पर प्रयोग सम्बंधी मापदंडों में सुधार करें। इसके अलावा यह देखना भी ज़रूरी है कि क्या चूहे मनुष्य की बीमारियों के अच्छे मॉडल हैं। पेरिन का मत है कि जंतुओं

का चयन सही तरीके से करना और सांख्यिकी की बेहतर विधियों का इस्तेमाल भी अनिवार्य है।

मसलन, एएलएस रोग के लिए एक चूहा मॉडल चुना गया था। इसमें एक जीन टीडीपी-43 में उत्परिवर्तन होता है। मगर यह इंसानों में होने वाले रोग से बहुत अलग लक्षण प्रकट करता है। जैसे टीडीपी-43 की गड़बड़ी से ग्रस्त चूहे आम तौर पर आंतों में अवरोध के कारण मरते हैं जबकि मनुष्यों में इसी

गड़बड़ी की वजह से मांसपेशियां बेकार होने लगती हैं और सांस लेने में दिक्कत होती है। इसके अलावा उन्होंने यह भी देखा कि जब टीडीपी-43 जीन में गड़बड़ी की गई तो प्रथम पीढ़ी के चूहे तो 200 दिनों के अंदर मर गए मगर अगली पीढ़ी के चूहे औसतन 400 दिन जीवित रहे और उनमें बीमारी के कोई लक्षण भी नज़र नहीं आए।

जंतुओं पर किए गए अध्ययनों के परिणामों को मनुष्यों पर लागू करने की दिक्कतों की बात कई अन्य शोधकर्ताओं ने ज़ाहिर की है। जैसे कैंसर अनुसंधान में यह प्रायः देखा गया है कि जंतुओं पर प्रयोगों से प्राप्त परिणाम मनुष्यों पर लागू नहीं होते।

इस तरह के जंतु अध्ययनों के आधार पर जब इंसानी परीक्षण किए जाते हैं तो काफी समय व पैसे की बरबादी होती है। कई बार जंतु परीक्षणों से प्राप्त नतीजों के आधार पर कोई दवा प्रचलित होने लगती है जबकि वह बेकार या हानिकारक भी हो सकती है। (स्रोत फीचर्स)